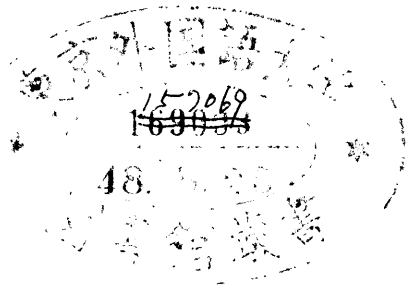

शुक्रवार व्रत कथा

अथवा

सन्तोषी माता की वार्ता

दोहा—सिद्ध सदन सुन्दर बदन, गणनायक महाराज ।
दास आपका हूँ सदा, कीजे जन के काज ॥
जय शिवशंकर गङ्गाधर, जय जय उमा भवानि ।
सिया सम कीजे कृपा, हर राधा कल्यानि ।

भक्त बन्धुओ और बहनो ! आज एक ऐसी पवित्र वार्ता आपको चरित्र रूप में सुना रहे हैं, जिसको श्रद्धा भक्ति पूर्वक सुनने और मनन करने से सद्गृहस्थ प्राणियों से युक्त घर में सब प्रकार का सुख और सन्तोष आता है यह देवी अनेक रूपवाली बनकर संसार में व्याप्त हो रही है । संसार के सुखों के खजाने को खोजने वाले लोगों ने अनेक जगह इस देवी का प्रभाव देखा है । हजारों इस घट-घट व्यापी महान शक्ति को भक्तिपूर्वक धारणा कर सब प्रकार से सुखी बन चुके हैं । इस परम आराध्य अलौकिक देवी शक्ति का नाम सच्ची श्रद्धा अथवा अन्तःकरण का निष्कपट स्वाभाविक प्रेम है । जगत के समस्त पदार्थों पर राज्य करने वाली इस अलौकिक सत्ता का रूप